इकाई -III Date - 06.06.2020

Topic - भाषा के आधारभूत कौशलों - सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना का विकास

Ans → भाषा हमारे जीवन का अति महत्वपूर्ण अंग होती है। हर व्यक्ति को अपने विचार और भावों की अभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है। परन्तु अपने विचारों को सही से अभिव्यक्त करने हेतु कुछ कौशल होते है, जिनके सही इस्तेमाल से ही व्यक्ति अपने विचारों या भावों को सही अर्थ में सही रूप से किसी के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है। भाषायी कुशलता का सम्बन्ध भाषा के चार कौशलों से है - श्रवण (सुनना), वाचन (बोलना), पठन (पढ़ना) और लैखन (लिखना)। इसका सही वर्गीकरण दो प्रकार से होता है - ग्रहणात्मक एवं अभिव्यक्तात्मक भाषायी कौशल। सुनना और बोलना एवं लिखना अभिव्यक्तात्मक कौशल के अंतर्गत आते है, जिनका प्रयोग अपने विचारों, भावों आदि की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है।

(1) सुनना ⇒ सुनने का अर्थ मात्र शब्दों को सुनना नहीं है, बल्कि सुनी गई बात का विश्लेषण करना और उस पर अपनी राय बनाना या प्रतिक्रिया देना है। सुनी गई बातों कहानियों, कविताओं आदि को अपने निजी जीवन से जोड़ पाना भी जरूरी है। भाषा कौशल विकास का प्रारंभ सबसे पहले श्रवण कौशल से होता है। सुनना केवल ध्वनियों का सुनना मात्र नहीं है। इसमें किसी कथन के ध्यानपूर्वक सुनने, सुनी गई बात पर चिंतन-मनन करने तथा चिंतन के बाद उसपर अपना मंतव्य स्थिर करके उसके अनुसार व्यवहार करने जैसी क्रमबद्ध प्रक्रियाएँ सम्मिलित है। ये सभी मानसिक स्तर के विकास सही शिक्षण एवं अभ्यास के साथ एक व्यक्ति में आते है।

श्रवण कौशल के विकास हेतु बहुत सी बातों का ध्यान रखना होता है। जैसे - कही गयी बात श्रोता अर्थात सुनने वाले के स्तरानुकूल होना चाहिए तभी सामने वाला आपकी बात सही अर्थ में समझ पायेगा। साथ ही प्रयोग में लाये जा रहे शब्दों का चयन श्रोता के मानसिक स्तर के अनुरूप होना चाहिए। बोलने वाले का उच्चारण भावानुकूल होना बहुत आवश्यक है। यदि बात को सही भावों से कहा जाएगा, तभी श्रोता उसका सही अर्थ समझ पायेगा। इसी प्रकार किसी भी चीज को सुनने-सुनाने के समय एकाग्रता, स्मरणशीलता एवं धैर्य जैसे गुणों का होना अति आवश्यक होता है जिससे सुनी या सुनाई गयी चीज का उद्देश्य सार्थक हो सके और उसका सही अर्थ निकल पाए।

Scanned with CamScanner